आधुनिकता तथा आम आदमी

इंद्रनाथ चौधुरी

इंद्रनाथ चौधुरी दिल्ली, हैदराबाद एवं बुखारेस्ट विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य के प्रोफेसर रहे हैं। आपने कई पुस्तकें लिखीं तथा कई पुस्तकों का हिन्दी और बांग्ला में अनुवाद किया। भारतीय साहित्य अकादमी के सचिव के रूप में लम्बे समय तक कार्य। लंदन में नेहरू सेण्टर के निदेशक पद भी कार्य। वर्तमान में सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली के अध्यक्ष हैं।

महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद यह कहा जाता है कि चार गांधी अभी भी जीवित हैं। एक, भारत राज का सरकारी गांधी। दूसरा, गांधीवादियों का गांधी। तीसरा, झक्की, सनकी लोगों का गांधी और चौथा गांधी जिसको पढ़ा नहीं जा सकता, वरन जिसके बारे में लगभग एक अफवाह की तरह सुन कर धारणा बना ली जाती है। यह गांधी विलक्षण स्थितियों में अभी भी जीवित है। कतिपय महत्वपूर्ण व्यक्तियों में जीवित है, जैसे दलाई लामा, आंग सान सू की अथवा नेल्सन मंडेला में या फिर 'लगे रहो मुन्ना भाई' जैसी फिल्मों में। यहां तक कि विभिन्न प्रकार के आंदोलनों में, जैसे एंटी न्यूक्लियर या मानवाधिकार अथवा पर्यावरण प्रदूषण से सम्बंधित आंदोलनों में भी, यह गांधी जीवित है। हालांकि इन सब स्थितियों में इस गांधी का जीवित रहना भारतीय विशिष्ट वर्ग को गवारा नहीं, वह काफी अशांत और असंतुष्ट है क्योंकि भारत का विशिष्ट वर्ग यह सोचता है कि गांधी जी की विचारधारा आधुनिक 'नेशन स्टेट' की आवश्यकताओं से मेल नहीं खाती। पिछले 15-20 वर्षों में हमारी न्यूक्लियर स्थिति, सैन्यीकरण, अलगाववादी आंदोलनों का मुकाबला करने की हमारी नीति अथवा विकास की मुख्यधारा का विचार तथा हमारे द्वारा मेगाटेक्नोलॉजी को स्वीकृति के कारण विशिष्ट वर्ग और भारतीय जनता की विचारधाराओं के बीच का फर्क और भी अधिक स्पष्ट हो गया है। भारतीय विशिष्ट वर्ग ने गांधी

जी की विरासत को कभी स्वीकार नहीं किया। पं. नेहरू ने गांधी जी को 5.10.1945 को लिखे एक पत्र में यह कहा था कि *''बहुत साल पहले मैंने 'हिन्द स्वराज' पढ़ा था और मेरे मन में उसकी एक धुंधली स्मृति है। फिर भी आज से 20 या कुछ अधिक वर्ष पहले जब मैंने उसे पढ़ा था वह मुझे पूरे तौर पर अवास्तविक लगा था। इसीलिए मुझे आश्चर्य है कि वह पुरानी तस्वीर अब भी आपके मन में अक्षुण्ण है। इंडियन नेशनल कांग्रेस ने कभी भी इसे स्वीकार नहीं किया।''* नेहरू पर गांधीवादी प्रभाव राष्ट्रीय आंदोलन तक ही सीमित था, नहीं तो वैचारिक अंतर दोनों में मूलभूत था। यद्यपि इन सबके बावजूद नेहरू के लिए गांधी की चिन्ता और गांधी के प्रति नेहरू की भक्ति निर्विवाद थी। 'हिन्द स्वराज' में विकास की मुख्यधारा से जुड़ी वैचारिक प्रक्रिया का विरोध किया गया था और आज नंदीग्राम और सिंगूर से यह स्पष्ट हो गया है। यह प्रक्रिया एक नये किस्म की हिंसा फैलाती है, खास तौर पर समाज के हाशिये पर रहने वाले लोगों के प्रति। यह बात दूसरी है कि कुछ लोग गांधी जी के पारम्परिक विचारों को स्वीकार न करते हों और एक अलग परम्परा का संकेत देते हैं जो चिन्तन प्रधान तथा आत्मालोचनापूर्ण है तथा आधुनिकता के अनुभवों को बाइपास या खारिज न करके उसको अपने ढंग से स्वीकार करने के पक्ष में है।

दक्षिण की दुनिया में विकास का सारा ढांचा दो प्रक्रियाओं के समाहार के रूप में निर्मित हुआ हैः एक, विकासवाद के सिद्धांत से सम्बद्ध आधुनिक विज्ञान को स्वीकार करते हुए उन्नति की संकल्पना और दो, आधुनिक उपनिवेशवाद के आश्रय से नये ढंग से सभ्य बनाने का मिशन। इन दोनों की सहायता से यह ढांचा बनाया गया है। विकास एक मनोवृत्ति है और अपने और दूसरों की तरफ देखने का एक उपाय है और परिणामतः 'विकसित' तथा 'विकासशील' जैसे पारिभाषिक शब्दों के द्वारा यह स्पष्ट किया जाता रहा है कि विकास ही सभ्यता का आधार है। गांधी जी ने इस सोच का घोर विरोध किया और लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए सन् 1909 में गुजराती में संवाद शैली में 'हिन्द स्वराज' की रचना की और जो दिसम्बर 1909 में 'इंडियन आपिनियन' में और जनवरी 1910 में पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई। मार्च 1910 में भारत की ब्रिटिश सरकार ने इसे जब्त कर लिया, हालांकि बहुत शीघ्र इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ मगर इसकी जब्ती की कोई सूचना नहीं है। कारण स्पष्ट है बर्तानिया सरकार को अंग्रेजी जानने वाले विशिष्ट वर्ग से कोई डर नहीं था क्योंकि उन्हें मालूम था कि यह वर्ग गांधी की इस चिन्तनधारा को सनकी गांधी के दिमाग की उपज समझ कर खारिज कर देगा। हुआ भी ऐसा ही। मगर गांधीवाद से गांधी जी कहीं अधिक बड़े हैं, उन्हें भुलाने से भी उनकी चिन्तनधारा को दबाना मुश्किल है क्योंकि वह फिर दूसरा रूप लेकर दुनिया के किसी और भाग में किसी और सार्वजनिक क्षेत्र में दूसरे लोगों की सहायता से प्रकट होती है। विश्व के दो सबसे बड़े अभारतीय गांधीवादी, नेल्सन मंडेला और आंग सान सू की ही सिर्फ इसके प्रमाण नहीं हैं वरन् आज के पर्यावरण तथा शांति आंदोलन, स्त्री विमर्श, सर्वधर्म संवाद तथा वैकल्पिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आंदोलन भी इसके बड़े प्रमाण हैं।

हिन्द स्वराज की भूमिका में गांधी जी ने लिखा है कि *''मेरे देशवासी आधुनिक सभ्यता की बुराइयों के लिए अंग्रेज जाति को दोषी ठहराते हैं। इसलिए वे समझते हैं कि अंग्रेज लोग बुरे हैं, न कि वह सभ्यता जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।''* इसलिए वे मानते हैं कि अंग्रेजों को देश से निकालने के लिए उन्हें आधुनिक सभ्यता और हिंसा के आधुनिक तरीके अपनाने चाहिए। गांधी जी कहते हैं कि *"'हिन्द स्वराज' यह दिखाने के लिए लिखा गया है कि इस आत्मघातकारी नीति पर चलना नहीं होगा। उसका उद्‌देश्य यह दिखाना भी है कि अगर वे अपनी गौरवमयी सभ्यता का ही पुनः अनुसरण न करेंगे तो अंग्रेज या तो उसको स्वीकार कर लेंगे और भारतीय बन जायेंगे या भारत से उनका अधिकार ही उठ जायेगा।"* दरअसल आधुनिक सभ्यता यानी पश्चिमी सभ्यता उनके लिए शैतानी राज्य है और प्राचीन भारतीय सभ्यता ईश्वर का राज्य। एक युद्ध का देवता है, दूसरा प्रेम का। गांधी जी के

तद्भव

मन में उग्र राष्ट्रवाद, उपभोक्ता आधारित विकास का सिद्धांत तथा अनुभूतिहीन विज्ञान के इस्तेमाल को लेकर काफी आशंका थी और परिणामतः वे पश्चिमी आधुनिकता के विरोधी थे। इसीलिए गांधी जी का हिन्द स्वराज आधुनिक सभ्यता की समीक्षा है। मास्टर नरेटिव के रूप में आधुनिक सभ्यता को स्वीकार करने पर प्रश्नचिह्न है। ब्रिटिश संसदीय गणतंत्र की कटु आलोचना है और अंततः हमारी आधुनिकता को स्वराज, स्वदेशी, सत्याग्रह तथा सर्वोदय की सहायता से रेखांकित करने का प्रयत्न है। आज की तीन ज्वलंत समस्याएं हैं :

1. आधुनिक सभ्यता तथा उद्योग अनुप्राणित समाज से सम्बद्ध विकास की अवधारणा हमारे लिए कहां तक सार्थक है?

2. संसदीय गणतंत्र हमारे लिए कहां तक उपयुक्त है?

3. आधुनिकता की क्या पहचान है?

दरअसल आधुनिकता का पूरा प्रश्न बाकी दो समस्याओं से जुड़ा हुआ है।

सन् 1947 के बाद उत्तर उपनिवेशवादी युग में विकास के पश्चिमी दृष्टिकोण, आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा पाश्चात्य आधुनिक अवधारणा की सहायता से पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने भारत के अर्थनैतिक विकास को सम्भव बनाने का प्रयत्न किया था। गुनर मिरदाल जैसे पश्चिमी विचारकों का दृष्टिकोण यही था कि भारत जैसा पारम्परिक समाज जब तक अपनी प्राचीन मूल्य व्यवस्था से मुक्त होकर आधुनिकीकरण की ओर आगे नहीं बढ़ेगा तब तक उसका विकास सम्भव नहीं यानी उपनिवेशवादी शासकों की आधुनिकीकरण और सभ्यकरण की भूमिका के आश्रय से ही हमारे जैसे देश का विकास सम्भव है। दूसरे शब्दों में हमें अपने यथार्थ को भूल कर, अपनी आधुनिकता को पहचाने बिना दूसरे की आधुनिकता को अपने ऊपर ओढ़ लेना पड़ेगा। किन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के बाद इन साठ वर्षों में हम यह निश्चित समझ पाये हैं कि विदेश से उधार लेकर कोई परिर्वतन सम्भव नहीं और न ही आधुनिकता के क्षेत्र में प्रवेश सम्भव है। जब तक हम अपनी आधुनिकता को परिभाषित नहीं करते तब तक आधुनिकता को, जो विकास का प्रतीक है, जो जीवन के यथार्थ से जुड़ा है उसको, रूपायित करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

आज इस उत्तर आधुनिक युग में अपनी आधुनिकता को परिभाषित करने की आवश्यकता को हम अधिक अनुभव कर रहे हैं। भूमंडलीकरण के प्रभाव स्वरूप जिस उपभोक्ता संस्कृति से हम प्रभावित हो रहे हैं वह ऐसी संस्कृति है जो पश्चिमी आधुनिक शैली को स्वीकारने को कहती है जिसमें विविधता के लिए कोई स्थान नहीं है और इससे प्रभावित होकर हम हीगल को सही मानने लग जाते हैं कि, कल्चरल माइनॉरिटी के बहुसंख्यक समाज के साथ सम्मिलित हो जाने से अल्पसंख्यकों को फायदा पहुंचता है। जान स्टूअर्ट मिल ने भी इस प्रकार की बात कही है कि सामाजिक आत्मसात्करण से अल्पसंख्यकों को फायदा पहुंचता है। परंतु हम यह भूल बैठे हैं कि आवश्यकता आत्मसात्करण की नहीं है, वरन् सामुदायिक भावना का प्रसार करना है। वैविध्य को फलने फूलने देना है। समांगीकरण (homegenisation), सहयोजन (cooption) तथा विनियोजन (appropriation) हमारे अस्तित्व के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं। भूमंडलीकरण के द्वारा यही किया जा रहा है और इससे जो खतरा पैदा हो रहा है उसका एहसास कराना निहायत जरूरी है। भारत की आत्मा को सही रूप से प्रतिष्ठित किये बिना हमारा विकास सम्भव नहीं।

पंडित जवाहर लाल नेहरू का कहना था कि राष्ट्र की आत्मा और विदेशी प्रभुत्वपूर्ण शक्ति के बीच के संघर्ष से आधुनिक भारत का निर्माण हुआ है। महात्मा गांधी जी ने भी भारतीय आत्मा की बात कही थी :*''भारत के लिए यह खतरा है कि वह अपनी आत्मा को खो बैठे। उसे खोकर भारत जीवित नहीं रह सकता। इसीलिए भारत को अकर्मण्य और असहाय बन कर बैठे रहना नहीं चाहिए। मेरे लिए पश्चिम के उन्मादपूर्ण प्रवाह से बचना कठिन हो रहा है। भारत को शक्तिशाली बनना होगा*

जिससे कि अपने खातिर और दुनिया के लिए वह इसका प्रतिरोध कर सके।''

नेहरू भारतीय आत्मा का पश्चिमी ढंग से नवीकरण चाहते थे और गांधी उसका फिर से आविष्कार करना चाहते थे। नेहरू का सपना था एक शहरी औद्योगिक भारत जिसमें सार्वजनिक उपक्रम को महत्वपूर्ण स्थान मिलेगा। यह नेहरूवियन सपना सन् 1990 से टूटने लगा था। केन्द्रयुक्त आर्थिक योजनाओं का टूटना तथा धर्म का आम संस्कृति एवं राजनीति से जुड़ना नेहरूवियन धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा गणतंत्र के लिए एक बहुत बड़ा धक्का था और ऐसी स्थिति में 'हिन्द स्वराज' में गांधी जी के इस उत्तर आधुनिक सपने को एक नया रूप मिलना शुरू हुआ है।

'हिन्द स्वराज' लिखते समय आधुनिकता और विकास के नाम पर जिस सभ्यता, टेक्नोलॉजी, संसदीय पद्धति आदि के अनुकरण की कोशिश हो रही थी उसको गांधी जी आधुनिक मानने के लिए तैयार नहीं थे। गांधी जी का 'हिन्द स्वराज' भारत की आधुनिकता को रेखांकित करने की प्रथम कोशिशों में से एक था। स्वदेशी और विदेशी के बीच कोई कशमकश पैदा करने की इच्छा गांधी की नहीं थी। वे सिर्फ हमें सावधान कर रहे थे कि उपनिवेशवादी मानसिकता या मानसिक उपनिवेशीकरण ा हमारे लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

टैगोर ने भी उन दिनों कहा था कि वास्तविक आधुनिकता मन की स्वाधीनता है, आस्वाद की गुलामी नहीं (not slavery of taste)। यह चिन्तन और क्रिया की स्वाधीनता है, यूरोपीय स्कूल मास्टरों की अभिभावकता में जीना नहीं। सन् 1784 में इमैनुएल कांट ने अपने एक छोटे से निबंध Enlightment में कहा था कि एनलाइटमेण्ट का अर्थ दूसरे के नियंत्रण से अपने को मुक्त करना है, आत्मनिर्भर बनना है और इस तरह इस मानसिक स्वाधीनता के द्वारा अपने को मुक्त करना है और अपने समसामयिक जीवन के बारे में स्वाधीन ढंग से सोचने के लिए रास्ता बनाना है। कांट प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने समसामयिक दुनिया की संरचना को अपनी दार्शनिक खोज का आधार बनाया था। मिशेल फूको ने बाद में इस बात की ओर इशारा भी किया था। कांट ज्ञानोदय (enlightment) के संकट की ओर इशारा नहीं कर रहे थे, न ही ऐतिहासिक विकास या ऐतिहासिक परिणामों की ओर उनका इशारा था। कांट सिर्फ यह जता रहे थे कि किस प्रकार अतीत से वर्तमान भिन्न है और इस भिन्नता के आश्रय से कैसे ज्ञानोदय के अर्थ या आधुनिकता की परिभाषा को रूप दिया जा सकता है। कांट की दृष्टि कालवाचक रही है और टैगोर की दृष्टि मूल्यवाचक। टैगोर के अनुसार हृदय की स्वाधीनता ही सच्ची आधुनिकता है। टैगोर कहते हैं कि आप अपने प्राच्य हृदय का प्रयोग कीजिए, आध्यात्मिक शक्ति, सरलता के प्रति अपने प्यार और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सचेतन हो जाइए और तब पश्चिम के असांसारिक विकास की गाड़ी जो केवल विसंगतिपूर्ण आवाज करती दौड़ रही है उसके रास्ते से अलग नया रास्ता बना पायेंगे। एक निबंध में टैगोर ने कहा था कि जब आप मानव की समस्याओं का संतोषजनक हल निकाल लेंगे और जीवित रहने की अपनी कला का विस्तार करेंगे तब अपनी वर्तमान स्थिति में इसका प्रयोग करने पर इसमें से एक नयी रचना पैदा होगी जो केवल अनुकरणात्मक नहीं होगी। ऐसी रचना को जनता की आत्मा अपने लिए स्वीकार करेगी और गर्व के साथ दुनिया के सामने मनुष्य के कल्याण के निमित्त हमारी श्रद्धांजलि के रूप में समर्पित करेगी। एशियायी स्वायत्तता तथा व्यक्तित्व की रचनात्मक अभिव्यक्ति के आधार पर टर्म्स ऑफ डिस्कोर्स को पुनः परिभाषित करने की टैगोर तथा गांधी की इस प्रचेष्टा में हमारी आधुनिकता को समझने का एक ताजा एजेण्डा तैयार हो रहा था।

गांधी जी के इन शब्दों को हमारे मन तथा आत्मा की स्वायत्तता की प्रारम्भिक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, खासतौर पर उस समय, उस परिवेश में जब पश्चिम के आधिपत्य (hegemony) पर प्रश्न उठाने का कोई अधिकार ही किसी को नहीं था। उन्होंने कहा था : *My resistance to Western civilization is really a resistance to its indiscriminate*

and thoughtless imitation based on the assumption that Asiatics are fit only to copy everything that comes from the West.

वस्तुतः पाश्चात्य प्राच्यविदों का यही हिडन एजेण्डा था। उनका कहना था कि भारत का अतीत निश्चय ही बहुत गौरवपूर्ण है परंतु उनका कोई वर्तमान नहीं। वर्तमान को बनाने के लिए उसे पश्चिम की ओर जाना पड़ेगा और धीरे धीरे भारत ने इस अवधारणा को स्वीकार कर लिया कि पश्चिमीकरण ही आधुनिकीकरण है। सर विलियम जोन्स ने सन् 1786 में कलकत्ता स्थित एशियाटिक सोसायटी में अपने 'डिस्कोर्स' में यह घोषित किया था कि भारतीय इतिहास की तलाश करते हुए सुदूर पुरातनकाल तक पीछे जाने के लिए वे तैयार हैं और ऊपर की ओर 11वीं सदी तक ही वे अपने शोधकार्य को सीमित रखना चाहेंगे। जोन्स के बाद लगभग सभी पश्चिमी प्राच्यविदों ने इस तथाकथित ऐतिहासिक अंतर को मानते हुए संस्कृत की परम्परा को मध्ययुग से पहले तक सीमित रखते हुए मध्ययुग और आधुनिक परम्परा से अलग ही नहीं रखा वरन् बड़ी चालाकी से मध्ययुग के लिए Pre British India पदनाम देकर उसको अंधकारमय सिद्ध करते हुए ब्रिटिश इंडिया के गौरव को प्रकट करने का प्रयत्न किया।

इस दासतापूर्ण बौद्धिक चिन्तन के विरोध में गांधी जी ने 'हिन्द स्वराज' में गैर पश्चिमी समाज के लिए उपयोगी उपनिवेशवाद के आधुनिकीकरण और सभ्यताकरण (civilizing) की भूमिका पर प्रश्न उठाने तथा इस मिथक को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका ग्रहण की। पी.सी.जोशी का यह कहना बिल्कुल ठीक है कि गैर पश्चिमी समाज तथा सभ्यता के बारे में पश्चिम की अभिधारणा (assump-tion) तथा आधार वाक्यों (premises) को लेकर आलोचनात्मक जांच, व्याख्या तथा मूल्यांकन की यह परम्परा गांधी जी से ही शुरू हुई थी। गांधी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भविष्यदृष्टा ऋषि की तरह पश्चिमी सभ्यता में निहित अशुभ प्रवृत्तियों की खतरनाक सम्भाव्य शक्ति का पर्दाफाश किया था। दूसरे चिन्तकों ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध आवाज उठायी थी परंतु किसी ने आधुनिकता के पश्चिमी मॉडल का विरोध नहीं किया था।

पश्चिमी परिभाषाओं के अनुसार प्रतिष्ठित नियमों, परम्पराओं तथा परिपाटियों से नाता तोड़ना आधुनिकता है और इस विश्व में मनुष्य के स्थान और कार्य को एक नयी दृष्टि से देखना है और कुछ स्थितियों में रूप तथा शैली को लेकर अभूतपूर्व प्रयोग करना है। भारत में आधुनिकता एक क्रिया व्यापार (phenomenon) या मूल्य के रूप में अतीत और भविष्य के संदर्भों से कटी नहीं है। वह अपने में पारम्परिक मूल्यों को और नवीनता को समेटे हुए है और नैरंतर्य के आधार पर इसका स्वरूप स्पष्ट हो पाता है। इसको समझने के लिए भीमसेन जोशी या कुमार गंधर्व के उदाहरण दिये जा सकते हैं। ये गायक अपने गायन में चाहे कितनी भी नवीनता लायें इन्हें कभी भी आधुनिक जैज या रॉक गायकों की तरह माडर्न नहीं कहा जा सकता। मगर व्यावहारिक दृष्टि से भारतीय परिस्थिति में जो कुछ भी पश्चिमी है, आधुनिक है और पश्चिमीकरण ही आधुनिकीकरण है। इसमें कोई शक नहीं कि विचार, चिन्तन, मनन, प्रणाली, प्रक्रिया का जो विस्तृत निकाय हमारे वर्तमान तथा हाल के समय से सम्बद्ध है उसकी उत्पत्ति पश्चिम में हुई मगर फिर भी हमारे आधुनिक बनने की प्रक्रिया में भीतर ही भीतर ऐसा कुछ घट रहा था कि पश्चिमी आधुनिकता को ग्रहण करने के बाद भी उसके मूल्य और फलाफल के सम्बंध में हम संशय में थे और लगातार अपनी आधुनिकता को परिभाषित करने की कोशिश में जुटे हुए थे।

राजनारायण बसु ने सन् 1873 में *'सेकाल और एकाल'* पुस्तिका लिख कर यह प्रमाणित किया था कि प्राचीन काल वर्तमान काल से अधिक आधुनिक था। अतीत काल की मूल्यवत्ता को महत्वपूर् ा मानते हुए और उसे आधुनिक करार देते हुए उन्होंने वर्तमान को ह्रास या पतन का काल कहा है। राजनारायण बसु कतिपय वस्तुगत अभिमतों की सहायता से इस निर्णय पर पहुंचते हैं। उनका कहना

है कि पहले लोग शारीरिक दृष्टि से अधिक स्वस्थ थे। आज मुनष्य की नैसर्गिक प्रकृति में परिवर्तन आ गया है। खाद्य के नाम पर कुखाद्य पर जोर है। अब लोग धर्मभीरु नहीं है। दयाशील और सरल भी नहीं लगते हैं। चरित्र की दृष्टि से छोटापन आ गया है। टैगोर भी आधुनिकता को मूल्यरूप में स्वीकार करते हुए शाश्वतता, स्थायित्व, आनंद, जो कविता को अंतर्मुखी बनाते हैं, तथा पारदर्शिता आदि को आधुनिकता की विशेषताएं बताते हैं। यहां तक कहा जा सकता है कि आधुनिकता कालवाचक शब्द है और इसीलिए आज के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर आधारित औद्योगिक सभ्यता के आधार पर आधुनिकता के स्वरूप का उद्‌घाटन होता है। मगर हम सब जानते हैं कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर आश्रित उद्योग आधारित नाजी जर्मनी की चिन्तनधारा तर्कविहीन, अवैज्ञानिक, बर्बरतापूर्ण तथा संवेदनशून्य थी ठीक उसी प्रकार जैसे विज्ञान पूर्व, प्रौद्योगिकी पूर्व तथा पूर्व औद्योगिक युग के कई समुदायों में देखा जा सकता है। इसीलिए समय के साथ जो घटनाएं घटती हैं, क्रिया व्यापार होता है उसके आधार पर आधुनिकता को परिभाषित नहीं किया जा सकता है। इसमें से एक महत्वपूर्ण अर्थ निकलता है कि विशेष अवस्था के अनुसार आधुनिकता के विशिष्ट रूपों का निर्धारण तथा युक्ति तर्क विचार बुद्धि का प्रयोग कर आधुनिकता के कौन से प्रकरण हमारे लिए उपयुक्त हैं इसका निर्वाचन अथवा उद्‌भावन ही यथार्थ आधुनिकता है अर्थात् आधुनिकता की कोई सर्वग्राह्य या सामान्य संज्ञा नहीं। तर्कबुद्धि के द्वारा हमारी विशेष आधुनिकता को समझना होगा।

सन् 1904 में रवीन्द्रनाथ टैगौर ने 'स्वदेशी समाज' निबंध लिखा था और 25 वर्षों के बाद और एक निबंध में उसकी ताईद की थी। उनका कहना था कि राष्ट्रप्रधान देश में राष्ट्रतंत्र के भीतर देश का मर्मस्थान विशेष रूप से आबद्ध रहता है। समाजप्रधान देश का प्राण सर्वत्र व्याप्त रहता है। पाश्चात्य राज्यशासन में भारत को यहां आघात मिला है। गांव गांव में उसका जो सामाजिक स्वराज परिव्याप्त था, राज्य शासन ने उस पर अधिकार कर लिया। विदेशी आधुनिकता ने हमारे मर्मस्थान पर आघात किया।

स्वामी विवेकानंद ने सन् 1902 में कहा था कि अनुकरण किसी सभ्यता की पहचान नहीं है। मैं पुरानी अर्थोडक्सी के पक्ष में हूं। उसमें नाना दुर्बलताएं हैं मगर फिर भी मैं उसमें विश्वास करता हूं। जो इसमें विश्वास करता है वह अपने पैरों पर खड़े होने की सामर्थ्य रखता है। मैं आधुनिक यूरोपीय सभ्यता के पक्ष में नहीं हूं। वस्तुतः पाश्चात्य सभ्यता की विवेकानंद घोर आलोचना करते हैं। इस तरह की घोर आलोचना, इस तरह की चरम पोजीशन लेने की जरूरत क्यों हुई? गांधी जी ने भी 'हिन्द स्वराज' में एक्सट्रीम पोजीशन लिया था। इस तरह का रुख कोई महान कवि या दिव्यदर्शी ही ले सकता है। कवि ब्लेक ने कहा था, All extremes open the gate of heaven। सत्य उदार दृष्टिकोण ा से नहीं चरम दृष्टिकोण से ही स्पष्ट होता है।

'हिन्द स्वराज' की प्रस्तावना में गांधी जी ने तीन उद्‌देश्यों का उल्लेख किया हैः

1. देश की सेवा करना। 2. सत्य की खोज करना। 3. उसके मुताबिक बरतना।

आज पता चल रहा है कि 'हिन्द स्वराज' आधुनिक सभ्यता की पहली समीक्षा है। प्रत्येक परिवर्धन (development) की भविष्यधर्मी गुणागुण परीक्षा है। आज परिवर्धन लगभग एक धर्म बन चुका है। गांधी जी ने परिवर्धन के इस विचार की समीक्षा की है और उसके साथ ही आधुनिक विश्व प्रणाली की भी समीक्षा की है।

तिलक ने राजनैतिक जीवन की शुरुआत गीता का भाष्य लिख कर की थी। गांधी ने राजनै. तिक पुस्तक 'हिन्द स्वराज' लिख कर की। बाद में गीता पर भाष्य लिखा। अर्थ स्पष्ट है : पहले अपने यथार्थ की पहचान जरूरी है, स्वराज का रास्ता ढूंढना है। हम अपने ऊपर राज करें वही स्वराज्य है और वह स्वराज्य हमारी हथेली पर है। अपने मन का राज्य स्वराज है, उसकी कुंजी सत्याग्रह, आत्मबल है और उस बल को अपनाने की जरूरत है और बाद में गीता के स्वधर्म, निष्काम कर्म और आत्म

समर्पण के मॉडल की सहायता से उसे पुख्ता करना है।

एक्सट्रीम व्यूज्स अर्थात पश्चिमी सभ्यता का विरोध, यंत्रवाद का विरोध, रेल, पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति, अस्पताल, न्यायालय, न्यायदान पद्धति का विरोध या ब्रिटिश संसद को बांझ और वेश्या कहना— इसके पीछे अर्थात् इस एक्सट्रीम व्यूज्स के पीछे उनके दो तीन उद्देश्य थे। संसदीय पद्धति बांझ क्यों, इसका उत्तर आज एकदम स्पष्ट है। संसद ने अथवा संविधान ने अस्पृश्यता तथा दहेज प्रथा खत्म कर दी है परंतु दोनों कुरीतियां समाज में पूरे तौर पर बरकरार हैं। दहेज के विरुद्ध जब तक जनमत तैयार नहीं होगा, कुछ नहीं किया जा सकेगा। उसी प्रकार अस्पृश्यता को दूर करने के लिए नयी संस्कृति की जरूरत है। कानून से अस्पृश्यता दूर नहीं की जा सकती। किसी भी मूलभूत परिवर्तन की जननी संसद नहीं होती है बल्कि सक्रिय सचेतन एवं जनमत होता है। संसदीय व्यवस्था वेश्या क्यों? जनमत के आधार पर जो राजनैतिक दल सत्ताधारी बनता है, संसद उसका प्रभुत्व स्वीकार कर लेता है परंतु यह विजय पूर्णरूप से नैतिक ढंग से नहीं घटती है। इसके पीछे रहता है रुपये का खेल, झूठी प्रतिश्रुति और नाना प्रकार की दुर्नीति। मगर जनमत हमेशा इससे प्रभावित होता है ऐसी बात नहीं, फिर भी संसदीय गणतंत्र कुछ नियम बांध देते हैं, लेकिन दुर्नीति को रोकना कठिन हो जाता है।

रेलवे की आलोचना कर उन्होंने विरोधियों को आकर्षणविहीन (deglamorize) कर दिया और साथ ही दूरदर्शिता का भी परिचय दिया। केन्द्र में रहने वाले पश्चिम प्रभावित मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी, जो राष्ट्रीय संग्राम के अग्रवर्ती थे, उनके स्थान पर बाह्य परिधि या हाशिये में रहने वाले किसानों का पक्ष लिया। इसके लिए राजनीति को गैर बौद्धिक करना था, हालांकि वे बौद्धिकता के विरोधी नहीं थे। बल्कि वे बौद्धिकतायुक्त विदेशी आधुनिकता के विरोधी थे। स्वाधीनता के संघर्ष में किसान, हरिजन और स्त्रियों को आगे लाना चाहते थे, गैर ब्राह्मणवाद (de brahmanization) के पक्ष में थे और हमारी सरलता, गरीबी और धीमेपन में सौन्दर्य को खोजना चाहते थे। लगता है कि यह रूढ़िवादिता है मगर औद्योगिकीकरण और विज्ञान के आधार पर परिवर्धन और सभ्य बनाने की विदेशी भूमिका, जो श्रेणीवाद, जातिवाद और शोषण को बढ़ावा देती थी, का विरोध था और फोक हिन्दूइज्म का पक्ष लेना था, हिन्दुत्व के लोकपक्ष या सर्वोदय को उजागर करना था।

गांधी जी को यह मालूम था कि विदेशी ज्ञान विज्ञान की चकाचौंध के द्वारा उपनिवेशवादी क्षमता के विस्तार की जो आधुनिक प्रक्रिया है उससे वैश्विक (global) आधुनिकता के हम मात्र ग्रहीता (receptor) ही बनेंगे, स्रष्टा बनने का अवसर कभी नहीं मिलेगा। इसीलिए गांधी जी की कोशिश थी कि वैश्विक आधुनिकता के मायाजाल को हटा कर ऐसा स्थान ढूंढना जहां अपनी आधुनिकता के हम ही नायक बन सकें। याद कीजिए पाश्चात्य आधुनिकता को भारतवर्ष की पराधीनता के समर्थन में सबसे बड़े तर्क के रूप में प्रयोग में लाया गया था। यह कहा गया कि भारतवासियों के उद्धार के लिए विदेशी शासन जरूरी है। हालांकि इसी आधुनिकता ने हममें साम्राज्यवाद के विरुद्ध खड़े होने का साहस जुटाया और आधुनिकता के नाम पर क्षमता के प्रसार की अंग्रेजों की अभिलाषा का भंडाफोड़ किया। हमें याद रखना होगा कि वैश्विक आधुनिकता के प्रांगण में हम अछूत हैं, हमारे लिए वह फैन्सी मार्केट है, वहां हम पहुंच नहीं सकते, इसीलिए, किसी भी प्रकार की आधुनिकता तर्कसिद्ध है और हमारे लिए मंगलमय, जैसी सोच गलत है।

हां, परिवर्तन जरूरी है, वर्तमान परिवर्तन की अपेक्षा रखता है, परिवर्तन करना उसका कर्तव्य है। परिवर्तन की आकांक्षा हमारी परम्परा के केन्द्रीय तत्व हैं। इसको समझाने के लिए नीहाररंजन राय ने दो पारिभाषिक तत्वों का उल्लेख किया है : कुल तथा शील। कुल आनुवंशिकता है, उत्तराधिकार है, परम्परा है। शील मनुष्य का विकास है (making of man), उसका व्यक्तित्व तथा व्यवहार है तथा वह कुल से प्रभावित रहता है। शील अपने स्थान और काल में कुल के उन तत्वों को नकारता रहता है जो अपनी शक्ति खो बैठे हैं और अपनी तरफ से विचारों और क्रियाओं के नये प्रकारों को

उसमें जोड़ कर हमारी परम्परा की निरंतरता को बरकरार रखते हुए वर्तमान को प्रखर तथा प्रभावशाली बनाता है और इस तरह परम्परा के साथ साथ नवीनता को स्वीकारते हुए परम्परा को हमेशा गतिशील रखा गया है। गांधी जी के स्वराज में यह अर्थवत्ता जुड़ी हुई है। स्वराज का अर्थ मात्र स्वाधीनता और स्व राज्य नहीं है। भारतीय चिन्तनधारा में सुरक्षा और सतत् प्रवाह है तथा यथार्थ को देखने, परखने तथा अनुभव करने का उपाय है। इसका अर्थ है आंतरिक ढंग से अपने को शक्तिशाली बनाना जिससे कि वर्तमान विकास की प्रक्रिया को हम चुनौती दे सकें और विकास और आधुनिकता की अवधारण ाा को बदल सकें। इसके परिणाम स्वरूप भारत की पारम्परिक साकल्यवादी (holistic) दृष्टि का फिर से अनुसरण करना सम्भव हो सकेगा और प्रकृति और समाज के साथ मनुष्य जीवन के सामंजस्य की पुनः स्थापना करते हुए नयी विचारधारा की छानबीन करना भी सम्भव हो पायेगा और आधुनिकता तथा विकास का अपना मॉडल तैयार करना सहज हो जायेगा। यह रवीन्द्र के द्वारा पूर्व और पश्चिम के सामंजस्य की बात नहीं है, श्री अरविन्द का सिलेक्टिव मॉडर्निज्म भी नहीं है। यह पाश्चात्य आधुनिकता की सहायता से विविधतायुक्त भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का अंतर्वेशन कर नयी संरचना की सृष्टि करने का अवसर देना है और इस तरह आज की तेजी से बदलती हुई दुनिया में हमारी आधुनिकता को परिभाषित करना है तथा जड़ें और पंख दोनों के महत्व को स्वीकारना है। गांधी जी के शब्द इस संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण हैंः *I do not want my house to be wallted in on all sides and my windows to be stuffed. I want the cultures of all lands to be blown about my house as free as possible. but I refuse to be blown off my feet by any.*

'यंग इंडिया' में बाद में उन्होंने लिखा कि नयी संरचना भारतीय (स्वदेशी) ढंग की होगी जहां प्रत्येक संस्कृति को न्यायसंगत स्थान प्राप्त है और वह अमरीकी ढंग की नहीं होगी जहां एक प्रधान संस्कृति बाकी सबको विनियोजित कर लेती है और जहां सामंजस्य नहीं वरन् जबरन निर्मित एक कृत्रिम एकता की सृष्टि उद्देश्य होता है। इसीलिए हमारी चुनौती केवल स्वदेशी नहीं स्वराज है और आधुनिकता की कोटियों का निर्माण है। गांधी जी ने इस तरह जो विकल्प हमारे सामने रखा वह परम्परा बनाम पाश्चात्य आधुनिकता का नहीं वरन् दोनों की इकट्ठे स्वीकृति बनाम किसी एक की बाध्यतामूलक स्वीकृति।

हमारा भविष्य इसमें निहित है कि हम उन विशेषताओं या तत्वों का आविष्कार करें जिससे हम अपनी आधुनिकता को रेखांकित कर सकें। हमारी आधुनिकता के विशिष्ट स्वरूप को पहचानने के लिए यह जरूरी है कि हमारे भीतर अन्यत्र प्रतिष्ठित आधुनिकता को ठुकराने का साहस हो। राष्ट्रीय संग्राम के युग में उसकी जरूरत थी। गांधी जी ने वह रास्ता दिखाया था। आज भूमंडलीकरण के युग में उस साहस को दिखाना फिर जरूरी हो गया है। भूमंडलीकरण एक नव उपनिवेशवाद है इससे बचने का एकमात्र रास्ता है कि हम अपनी मानसिकता का गैर उपनिवेशीकरण करें। *'हिन्द स्वराज'* के द्वारा गांधी जी का उद्देश्य था कि हम अपने को पहचानें तथा हम अपनी दुर्बलताओं को भी पहचान लें यानी अपने यथार्थ को पहचानना यानी अपनी आधुनिकता को पहचानना और उसके लिए उनके द्वारा निर्मित मॉडल कुछ इस प्रकार थाः पहले प्राचीन सभ्यता की स्वीकृति फिर स्वराज की बात। सभ्यता फर्ज अदा करने का आचरण है। फर्ज अदा करना नीति का पालन करना है। नीति का पालन मन और इंद्रियों पर काबू पाना है, भोग पर नियंत्रण पाना है। काबू करने का अर्थ अपने को पहचानना, सर्व की पहचान है।

सभ्यता के नियमों के बारे में गांधी जी का कहना था कि हिंसा हिन्दुस्तान के दुःखों का इलाज नहीं है और भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए आत्मरक्षा के लिए अहिंसा और सत्याग्रह का प्रयोग ही उचित है। अहिंसा हमारा आध्यात्मिक तत्व है। उसे गांधी जी ने सैनिक और आर्थिक शक्ति के विरोध में इस्तेमाल किया, जिसे दुर्बल तत्व माना गया था उसे उन्होंने सबल बना दिया। शांतिपूर्ण

प्रतिरोध (सत्याग्रह) के द्वारा क्रियात्मक (active) स्थिति पैदा की गयी। पीड़ित व्यक्ति के दुःख दर्द के स्थान पर सत्याग्रही की तरह दुःख दर्द स्वीकारते हुए उसे महिमान्वित बना दिया। भारतीय सभ्यता की विशेषता है कि वह व्यक्ति को भोग से दूर रखता है और इसीलिए आधुनिक सभ्यता का उससे मेल नहीं है। आधुनिक सभ्यता का लक्ष्य भौतिक उन्नति है और इसके लिए टेक्नॉलाजी का उपयोग किया जा रहा है। टेक्नॉलाजी पर्यावरण को नष्ट कर रही है तथा उपभोग और हिंसा को बढ़ावा दे रही है। पर्यावरण विनाश और हिंसा विश्व की आज दो बड़ी चुनौतियां हैं।

इन चुनौतियों का सामना करने का एक ही उपाय है। पर्यावरण के साथ मनुष्य के एकमेक होने के रास्ते को ढूंढ निकालना है। यही प्राचीन भारतीय रास्ता है। इसी को पर्यावरण प्रभावित नैतिकता कहा गया है। हिंसा, मनुष्य शरीर का अनादर करना है। धार्मिक उग्रवाद तथा राजनैतिक विचारधारा यह समझती है कि धर्म या राजनीति के नाम पर हत्या करने का लाइसेंस उनके पास रहता है और फिर उपभोक्ता संस्कृति से जुड़ी सेक्स की भूख ने शरीर को अर्थहीन बना दिया है। शरीर में ईश्वर का निवास है। हमारे पुराने रूपक अंग अंगी, देह देही, पुर पुरुष प्रसिद्ध हैं। ये रूपक पेण्टर्स ऑफ वायलेन्स को दूर करने के उपाय थे। गांधी जी धर्म का मूल दया मानते हुए सत्याग्रह के द्वारा दया, बल और आत्मबल के प्रसार की बात करते हैं और हिंसा को रोकने के लिए उसका प्रयोग करते हैं।

गांधी जी आज के बुद्धिजीवियों की तरह विउपनिवेशीकरण (decolonization) तक अपने को सीमित नहीं रखते। विउपनिवेशीकरण का पूरा एजेण्डा स्व एवं समाज से सम्बद्ध है, उसमें अन्य (other) के बारे में कुछ उल्लेख नहीं होता है। संस्कृति और समाज की स्व परिभाषा बनाना तथा विदेशी शक्ति से मुक्ति पाना विउपनिवेशीकरण की परिभाषा रही है। गांधी जी ने इस परिभाषा को बदल दिया। स्वराज में अन्य के लिए भी उन्होंने स्थान बनाया और इस तरह कॉलोनाइजर तथा का. ॅलोनाइज्ड दोनों की स्वाधीनता को उन्होंने स्वीकृति दी। वस्तुतः *'हिन्द स्वराज'* एक वैकल्पिक स्थिति पैदा करता है। एक वैकल्पिक मूल्य व्यवस्था की रचना करता है। यह भारतीय आधुनिकता की सबसे बड़ी बात है। यह पाश्चात्य आधुनिकता की तरह एक को बहिष्कृत कर दूसरे की प्रतिष्ठा नहीं करता। यहां वैकल्पिक स्थितियां उपस्थित की जाती हैं। पश्चिम शब्द केन्द्रित (logo centric) तथा ऐकांतिक है। भारत प्रतीकात्मक तथा अंतर्भावयुक्त है। भारत समायोजन के द्वारा अपना विकास करता है और अपने को बार बार वर्णित करता है। पश्चिम प्रतिस्थान के द्वारा विकसित होता है। इसीलिए भारत में प्राचीन विचारों को भले ही नये विचार स्थान न दें मगर प्राचीन विचार खो नहीं जाते, नवीन के साथ सहवस्थान करते हैं। यहां एक का बहिष्कार कर अपनी आधुनिकता की रचना नहीं की जाती। यहां विकल्पों को स्वीकारा जाता है इसीलिए *'हिन्द स्वराज'* स्व की स्वाधीनता की बात करता है, अपने को पहचानने की बात करता है, सिर्फ विकास की बात नहीं करता जिससे धन अधिक पैदा हो सके। ऐसी दुनिया या लोगों की बात करता है जिनकी सहायता से स्वराज मिल सके। गांधी जी आधुनिकता और परम्परा को जोड़ने की बात नहीं करते अंतर्वेशन के द्वारा आधुनिकता की नयी संरचना का निर्माण करते हैं। इसीलिए बहुत से समाज सुधारकों की तरह परम्परा, जातिवाद, ब्राह्मणवाद आदि का तिरस्कार करते हुए डरते नहीं। यही क्रिटिकल इनसाइडर का काम है और इसीलिए आधुनिकता से लिए गये उदारवादी तथा मानवीय संशोधनों को भी स्वीकारते हैं जिससे कि तेजी से बदलती हुई दुनिया में हम अपनी आधुनिकता को सही ढंग से परिभाषित कर सकें।

इसीलिए चुनौती सिर्फ स्वदेशी और स्वराज की खोज नहीं जिससे कि आधुनिकता की कोटियों का निर्माण हो सके बल्कि विशेषताओं और सिद्धांतों की खोज भी है जिससे हमारी आज की आधुनिकता सही रूप से परिभाषित हो सके। उपनिवेशीकृत समाज में एक ओर शोषकीय तथा प्रतिक्रियावादी तत्व पैदा हो जाते हैं या संस्कृति का जो हिस्सा बचा रह जाता है उसको पकड़े रखा जाता है। इस तरह समाज, धर्म, स्वदेशी, परम्परा की बात प्रतिक्रियात्मक ढंग से करते हैं। गांधी जी की तरह धर्म के

भीतर जो धर्म है उसकी बात नहीं करते या फिर उपनिवेशी स्वामी की प्रतिमूर्ति (mirror image) बन जाते हैं और दूसरी तरफ परिणामतः छाया हृदय (shadow mind) पैदा होता है, अनुकरण ही जिसके लिए सब कुछ होता है। *'हिन्द स्वराज'* ने गहन प्रश्नों के द्वारा आंतरिक शत्रुओं का पता दिया, उसके आधार वाक्यों को उघाड़ा, उसकी सांकेतिक भाषा को डी-कोड किया।

भारतीय संस्कृति तथा चिन्तन की बड़ी बात विविधता है। असहमतियों को कबूलते हुए एकता का प्रसार है। यह संस्कृति एक ऐसे समाज की बात करती है जो पिरामिड नहीं, जो ऊंचाई के स्थान पर लगातार चौड़ाई में प्रसारित होने वाले सागरीय वृत्तों की तरह फैला हुआ समाज है। ऐसा समाज भारत का ग्राम समाज है इसीलिए गांधी जी गांव के समाज को, स्वदेशी को प्रमुखता देते हैं। और इसके लिए क्षमता के विकेन्द्रीकरण का पक्ष लेते हैं। राजधानी क्रमशः समग्र समाज को ग्रस रही है इसीलिए राज्य सरकार नहीं, ग्राम समाज को ही गांधी जी ने क्षमता की भित्ति के रूप में स्वीकार किया है। मगर आज गांव तीन तरह के बोझों से दबा हुआ है : 1. सरकारी शासन तंत्र का बोझ 2. व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का बोझ तथा 3. राजनैतिक दलों की राजनीति का बोझ
इनमें से पहले दो दबावों से गांव पूर्व परिचित हैं। राजनैतिक दलों की राजनीति अभी की बात है। दलीय राजनीति का एक अपना आदर्शगत वक्तव्य होता है। क्षमता की लड़ाई इस आदर्श के नाम पर चलती है। क्षमता के लिए नीति विसर्जित होती है तथा दलों की स्वार्थ रक्षा के लिए अपराधीकरण का प्रसार होता है। यह लड़ाई राजधानी के लिए होती है मगर इसके लिए गांव पर कर्तृव्य जरूरी है और परिणामतः गांव के समाज को धक्का लगता है।

ग्रामीण समाज के अभ्यंतर में एक आत्मीय समाज का आदर्श रहता है और वह निर्दलीय लोकनीति से मेल खाता है। बहुदलीय व्यवस्था नहीं, एकदलीय राजनीति नहीं, निर्दलीय लोकनीति के साथ गांधी जी के मतादर्श का मेल है। यहां गांधी जी संसदीय गणतंत्र का अतिक्रमण कर जाते हैं। यही गांधी मार्ग है। आज के राजनेता कहेंगे, असम्भव, यह असम्भव है। गांधी जी कहेंगे, इसके बिना समाज की मुक्ति सम्भव नहीं। दरिद्रता, अशिक्षा, छोटेपन के बावजूद रवीन्द्र और गांधी ने ग्राम में ही भारतीय आदर्श समाज के मूल सूत्रों को प्रत्यक्ष किया था। टैगोर का कहना है कि इस देश में राष्ट्रनीति और समाजनीति में हमेशा फासला रहा है। ग्रामीण समाज के अभ्यंतर में एक आत्मीय समाज का आदर्श है। नाना अविचार, कुसंस्कार और अशिक्षा के बावजूद यही ग्राम समाज का अपना आदर्श है। मनुष्य के साथ मनुष्य का आत्मीय सम्बंध स्थापन चिरकाल भारतवर्ष की सर्वप्रधान चेष्टा थी। हम किसी व्यक्ति के सम्पर्क में आने से उसके साथ एक सम्बंध बना बैठते हैं। इसके अच्छे बुरे दोनों प्रकार के परिणाम सम्भव हैं, मगर यही इस देश की प्राच्य परम्परा है। ग्राम समाज=आत्मीय समाज=प्रतिवेशी समाज और इसमें समवाय यानी सर्वोदय की भावना अनुस्यूत है। इसकी तुलना में राष्ट्र एक हृदयहीन यंत्र है। गांधी जी कहते थे व्यक्ति के पास हृदय होता है मगर राष्ट्र हृदयहीन मशीन की तरह है। आजकल नगरों में राष्ट्रनीति के साथ वणिक शक्ति आ मिली है। रवीन्द्र का कहना है कि नगर देश की शक्ति का क्षेत्र है, ग्राम प्राण का क्षेत्र है। इस गांव को केन्द्र में लाने के लिए ही रवीन्द्र और गांधी जी ने स्वदेशी का पक्ष बना लिया था। स्वदेशी केवल प्रयावर्त्तन नहीं है, एक स्थायी उपाय ढूंढना है और इस तरह गांव को स्वनिर्भर बनाना है और शहर के शोषण से गांव को मुक्त रखना है। इसके लिए रास्ता समवाय का है और यही सत्य आनंद द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। समवाय नीति मनुष्यत्व की मूल नीति है, मनुष्य के सहयोग से ही मनुष्य, मनुष्य है। गांधी जी और रवीन्द्र यंत्र के विरोधी नहीं थे, यांत्रिकता के विरोधी थे। यंत्र ने भोग को बढ़ाया है, भोग स्थायी तृप्ति नहीं दे सकता, संयम के द्वारा ही जीवन में तृप्ति सम्भव है। भोग की दृष्टि में सभी उपकरण हैं और ऐसी स्थिति में प्यार भी उपकरण बन जाता है। रवीन्द्र नाथ भोग की वासना को सौन्दर्यबोध के द्वारा नियंत्रित करना चाहते थे, गांधी जी नैतिकता के द्वारा, और उसका उत्स प्रेम की शक्ति में था। उनका कहना था:

"The fact that there are so many men still alive in the world shows that it is based on the force of truth of love". गांधी जी ने भारत के यथार्थ को समझने का, उसके विकास का यही आधार माना था। हमारी आधुनिकता परम्परा तथा पाश्चात्य आधुनिकता को जोड़ कर नहीं, उनके अंतर्वेधन (interpenetration) के द्वारा एक नयी संरचना की सृष्टि की सहायता से विकसित हुई है। दूसरे के प्रभुत्व (dominance) तथा स्थानापन्नता से बचने के लिए आज गांधी जी की फिर जरूरत है। गांधी जी हमें हमेशा पश्चिम की ओर जाने से सचेत करते रहेंगे, जो हमें विदेश को अपने ढंग से, अपनी शर्तो (terms) पर स्वीकार करने के लिए रास्ता दिखाते रहेंगे, हमें अपने ढंग से परिभाषित करने में सहायता करेंगे। श्री अरविन्द ने चयनात्मक आत्मसात्करण (selective assimilation) की बात की है। आज विदेशी प्रभाव से बचना मुश्किल है मगर नकल नहीं, अपनी शर्तों पर चयनात्मक आत्मसात्करण करना है।

गांधी जी ने आध्यात्मिक नैतिकता की सहायता से हमारी अर्थनैतिक तथा सैनिक कमजोरी को शक्ति में बदल दिया। अहिंसा को हमारी सबसे बड़ी शक्ति बना दी। सत्याग्रह की सहायता से शोषितों की तरह नहीं, विद्रोही की तरह जीना सिखाया और इस तरह सत्याग्रह को अस्त्र में बदल दिया। सहनशीलता (passive) को सक्रियता में बदलने का अभूतपूर्व कार्य किया। शक्तिहीन शक्तिशाली हो गया। पाश्चात्य आधुनिकता का विरोध कर हमें अपने यथार्थ को पहचानने का रास्ता दिखाया। ग्राम को विकास के केन्द्र में लाकर वैकल्पिक टेक्नोलॉजी, स्वदेशी का प्रसार तथा सर्वोदय को महत्व देते हुए लोक हिन्दुत्व (Folk Hinduism) का पक्ष लिया और भारतीयों को सशक्तिकरण का मार्ग दिखाते हुए आधुनिकता की व्याख्या की।

आज आशीष नंदी के शब्दों में, गांधी जी हमारे लिए फिर से प्रासंगिक बन गये हैं। आज बौद्धिक वर्ग भी, जो अधिकतर पश्चिम का हिमायती रहा है, यह मानने लगा है कि हमें फिर से यह बात स्पष्ट करनी होगी कि इस देश में तीन चौथाई भारतवासी गांव में रहते हैं और इनके पास वोट देने का अधिकार है मगर पब्लिक डिस्कोर्स में इनके विचार, इनकी अभिरुचि, इनके भावावेग, इनकी विश्वदृष्टि का कोई स्थान नहीं, मगर यदि गणतांत्रिक पद्धति बची रही तो भविष्य में इनके विचार, अभिरुचि, भावावेग और विश्वदृष्टि को नजरअंदाज करना सम्भव नहीं होगा। इन वंचित तथा वर्जित नागरिकों को भारतीय राजनैतिक संस्कृति में कोई वैधता नहीं मिली है यद्यपि इस मिथकीय 'आम आदमी' के नाम पर आप कुछ भी कह सकते हैं और साफ बच के निकल सकते हैं। यह कोई दुर्घटना नहीं थी कि कामराज नादर ने प्रधानमंत्री बनने से इंकार कर दिया क्योंकि उन्हें अंग्रेजी अथवा हिन्दी नहीं आती थी। इन वंचित तथा वर्जित नागरिकों ने आज सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश तो कर लिया है परंतु उनके प्रवेश को तथाकथित आधुनिकतावादियों ने सही दृष्टि से नहीं लिया और उनसे केवल शिकायत ही सुनने को मिलती है कि ये लोग अपना अंधविश्वास, पूर्वग्रह तथा पूर्वजप्रवृत्तिक विचारों को राजनीति में लाकर भारी नुकसान कर रहे हैं।

यह इसलिए कि भारत की राजनैतिक संस्कृति, अंततः प्रमुख राजनैतिक संस्कृति, अन्य संस्कृति ने आम आदमी की दुनिया के साथ जोड़ कर उनके भावावेग, अनुभूति, विश्वास, रूढ़ियां, पूर्वग्रह आदि पर कभी बातचीत करने की कोशिश नहीं की। अधिकतर लोग भारतीय राजनीति की बात करते हुए आम आदमी के भावावेगों को छिपा कर सामान्य उदारवादी, कभी फैशन में रहे डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट नारों का ही उल्लेख करते रहे हैं। कदाचित इनसे अलग एक विस्तृत जनसमुदाय के अंतर्मन में जमीन से जुड़े भारत के यथार्थ का भाव मौजूद था और उचित परिस्थितियों में आज इसको उभर कर सामने आने का अवसर मिला है। यह भाव राजनीति क्षेत्र के प्रमुख वैश्विक कामनसेंस की अभिरचना को भुला कर तथा रूढ़िगत समझदारी से बच कर आम आदमी के अस्तित्व, उसकी सम्भावनाओं तथा जीवन की स्वीकृति को ग्रहणीय बनाता है। यही गांधीवादी कृत्य है। जिसे कहने के लिए गांधीवादी बने बिना

तद्भव

आप गांधीवादी बन सकते हैं। गांधी जी कहते थे, *“जब तुम्हारे मन में संदेह हो जब तुम्हारा स्व तुम पर हावी होता दिखाई पड़े तब इस प्रयोग को आजमां के देखिए। गरीब से गरीब लोगों के चेहरों को याद कीजिए और सबसे ज्यादा गांव के मूक गरीबों को याद कीजिए, जो आमतौर पर हमारी दृष्टि और विचारों से परे होते हैं। अपने को पूछिए कि जो कदम आप उठाना चाहते हैं क्या इन लोगों को उससे कोई फायदा है, दूसरे शब्दों में क्या इससे करोड़ों भूखे और आध्यात्मिक दृष्टि से वंचित को स्वराज्य तक पहुंचाया जा सकेगा? तब देखेंगे कि आपका संदेह और स्व आपसे विदा हो चुका है।”*

हिन्द स्वराज से लेकर उनकी अन्य भी पुस्तकों में इसी गरीब आम मानव के उत्थान की सम्भावनाओं का उल्लेख है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर इकट्ठे भारतबोध तथा विश्वबोध की भावना को लेकर अग्रसर हुए थे। जातीय सत्ता और अंतर्जातीय सत्ता रवीन्द्रनाथ जी के लिए केवल सहज ही नहीं जन. मजात थी। गांधी जी अंतर्जातीय शब्द का अधिक व्यवहार नहीं करते थे। उनकी यथार्थबुद्धि निर्गुण शब्दों को पसंद नहीं करती थी। अंतर्जातीय शब्द की तुलना में मानव कहीं अधिक सगुण है। गांधी मानव शब्द का अंतर्जातीय अर्थ में व्यवहार करते थे। उनका विश्वास था कि मानव के लिए जो सत्य है, सब जातियों के लिए वह किसी भी हालत में मिथ्या नहीं हो सकता।

आप गांधी को सनकी और उन्होंने कई गलत काम किये हैं, कह कर उनकी प्रतिष्ठा घटा नहीं सकते क्योंकि उनके विचार एक निश्चित मूल्यव्यवस्था से जुड़े हुए मानव की मूलभूत आंतरिक आवश्यकताओं पर आधारित हैं।